# धीरज श्रीवास्तव

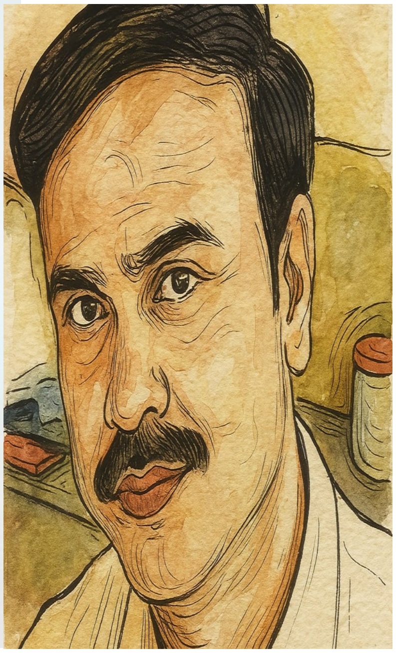

नाम- धीरज श्रीवास्तव

पिता- स्व. रमाशंकर लाल श्रीवास्तव

माता- स्व. श्रीमती शान्ती

जन्मतिथि- 01-09-1974

वर्तमान पता- ए- 259, संचार विहार मनकापुर जनपद--गोण्डा (उ.प्र.) पिन - 271308

स्थायी पता- ग्राम व पोस्ट - चिताही, जनपद- सिद्धार्थ नगर (उ.प्र.)

शिक्षा- स्नातक

**संपादन**- मीठी सी तल्खियाँ (काव्य संग्रह), नेह के महावर (गीत संग्रह)

**प्रकाशन**- मेरे गांव की चिनमुनकी (गीत संग्रह) 'धीरज श्रीवास्तव के गीत( डॉ.सुभाष चंद्र द्वारा संपादित)

**साझा संग्रह**--- समकालीन गीतकोश, ग़ज़ल ए गुलदस्त, पांव गोरे चांदनी के, कवितालोक उद्भास, शुभमस्तु,क़ाफ़ियाना, मीठी सी तल्खियां -भाग -2,3,और 4,दोहे के सौ रंग,गीतिकालोक, कुण्डलिनी लोक,तेरी यादें, अनवरत -3, अन्तर्मन, तलाश, मंजर, शब्दों के इन्द्र धनुष,कवि का कहना है, गुनगुनाएं गीत फिर से, एहसासों की पंखुड़ियां, गीत प्रसंग आदि में रचनाओं के प्रकाशन सहित राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं एवं ई पत्रिकाओं में रचनाओं का निरंतर प्रकाशन।

सम्मान--अनेक सम्मान एवं पुरस्कार।

संप्रति --- संस्थापक सचिव, साहित्य प्रोत्साहन संस्थान, एवं "साहित्य रागिनी" वेब पत्रिका।

मोबाइल नंबर- 8858001681, ईमेल- dheerajsrivastava228@gmail.com

# हो सके तो माफ करना

हो सके तो माफ करना हाथ जोड़े जा रहा हूँ।

जिन्दगी सम्बन्ध तुमसे आज तोड़े जा रहा हूँ।

चुभ रहे थे ये हृदय में

रोज बनकर शूल से!

जो लगे थे पैरहन पर

दाग मेरी भूल से!

आँसुओं ने धो दिए अब बस निचोड़े जा रहा हूँ।

जिन्दगी सम्बन्ध तुमसे आज तोड़े जा रहा हूँ।

सोचकर पछता रहा हूँ
साथ चल पाया नहीं!
तोड़कर मैं चाँद तारे
क्यों भला लाया नहीं?
क्या करूँ अब राह अपनी मीत मोड़े जा रहा हूँ।
जिन्दगी सम्बन्ध तुमसे आज तोड़े जा रहा हूँ।

अग्नि देकर यार मुझको
लौट आएँगें सभी!
पर रचे जो गीत तुम पर
खूब गाएँगें कभी!
इसलिए इनको तुम्हारे पास छोड़े जा रहा हूँ।
जिन्दगी सम्बन्ध तुमसे आज तोड़े जा रहा हूँ।

साहित्य रत्न वर्ष-3 अंक-4 अगस्त2025 : ISSN:2583-8849

# हो सके तो तुम चली आओ प्रिये

ये उदासी प्राण लेकर जा रही
हो सके तो तुम चली आओ प्रिये।

भावनाएँ राधिका सी,
हो गयीं हैं बावरी!
कृष्ण गोरे हो गये हैं,
गोपियाँ सब साँवरी!
घोलती थी मधु कभी जो कान में
बाँसुरी वह तान लेकर जा रही
हो सके तो तुम चली आओ प्रिये।

सोच के हर दायरे में
उलझनों के तार हैं!
घोंटने को जो गला अब,
हर घड़ी तैयार हैं!
मैं विकल हूँ और दुनिया मस्त है
कामना सम्मान लेकर जा रही
हो सके तो तुम चली आओ प्रिये।

पूछते कुछ लोग मुझसे,
क्या बताऊँ मैं भला?
दिन दहाड़े आज उसने
और कब तुमने छला!
और भी कहनी थी तुमसे अनकही
साँस पर संज्ञान लेकर जा रही
हो सके तो तुम चली आओ प्रिये।

# रक्षा करना राम

मन मैंना का इमली जैसा
तन ज्यों कच्चा आम।
घूर रही हैं कामुक नजरें
रक्षा करना राम।।

गली गली टर्राकर मेंढक
खूब जताते प्यार !
मारें बाज झपट्टे निश दिन
टपकाते हैं लार !
उल्लू अक्सर आँख मारते
गिद्ध करे बदनाम ।

दारू पीकर कछुए ताड़ें
सर्प रहे फुफकार !
गिरगिट करें इशारे फूहड़
घोंघों की सरकार !
अचरज क्या फिर, करें केंचुए
मगरमच्छ का काम ।

जाए कहाँ भला बेचारी
खतरे में है जान !
घूम रहे हैं चूहे तक जब
बन करके हैवान !
धूर्त भेड़िए आँगन कूदें
सुबह दोपहर शाम ।

सोच रहे चमगादड़ बैठे
कर लें इसको कैद !
चोंच मारते कौवे सारे
बगुले हैं मुस्तैद !
किन्तु लिखा है उसके दिल पर
बस तोते का नाम ।

साहित्य रत्न वर्ष-3 अंक-4 अगस्त2025 : ISSN:2583-8849

# तुम पर कोई गीत लिखूँ

बहुत दिनोँ से सोच रहा हूँ तुम पर कोई गीत लिखूँ।
अन्तर्मन के कोरे कागज पर तुमको मनमीत लिखूँ।

लिख दूँ कैसे नजर तुम्हारी
दिल के पार उतरती है !
और कामना कैसे मेरी
तुमको देख सँवरती है !
पंछी जैसे चहक रहे इस मन की सच्ची प्रीत लिखूँ।
बहुत दिनोँ से सोच रहा हूँ तुम पर कोई गीत लिखूँ।

लिख दूँ हवा महकती क्योँ है?
क्योँ सागर लहराता है !
जब खुलते हैँ केश तुम्हारे
क्योँ तम ये गहराता है !
शरद चाँदनी क्योँ तपती है क्योँ बदली ये रीत लिखूँ।
बहुत दिनोँ से सोच रहा हूँ तुम पर कोई गीत लिखूँ।

प्राण कहाँ पर बसते मेरे
जग कैसे ये चलता है !
किसका रंग खिला फूलोँ पर
कौन मधुप बन छलता है !
एक एक कर सब लिख डालूँ अंतर का संगीत लिखूँ।
बहुत दिनोँ से सोच रहा हूँ तुम पर कोई गीत लिखूँ।

इन नयनोँ के युद्ध क्षेत्र मेँ
तुमसे मैँ हारा कैसे !
जीवन का सर्वस्व तुम्हीँ पर
मैँने यूँ वारा कैसे !
आज पराजय लिख दूँ अपनी और तुम्हारी जीत लिखूँ।
बहुत दिनोँ से सोच रहा हूँ तुम पर कोई गीत लिखूँ।

# क्या रक्खा अब यार गाँव में

क्या रक्खा अब यार गाँव में।
नहीं रहा जब प्यार गाँव में।

बड़कन के दरवाजे पर है
खूँटा गड़ा बुझावन का!
फोड़ दिया सर कल्लू ने कल
अब्दुल और खिलावन का!
गली-गली में बैर भाव बस
मतलब का व्यवहार गाँव में!
क्या रक्खा अब यार गाँव में।
नहीं रहा जब प्यार गाँव में।

बेटी की लुट गई आबरू
बूढ़ा श्याम अभी जिन्दा!
देख बेबसी बेचारे की
मजा ले रहा गोविन्दा!
सच का है मुँह धुआँ-धुआँ बस
झूठों का अधिकार गाँव में!
क्या रक्खा अब यार गाँव में।
नहीं रहा जब प्यार गाँव में।

टूट चुकी मर्यादा सारी
बिगड़ों पर प्रतिबन्ध नहीं!
गौरी भोला चिनगुद में भी
पहले-सा सम्बन्ध नहीं!
चोर-उचक्के बने चौधरी
घूम रहे मक्कार गाँव में!
क्या रक्खा अब यार गाँव में।
नहीं रहा जब प्यार गाँव में।

# आँसू

जानते सब धर्म आँसू।
वेदना के मर्म आँसू।

चाँद पर हैं ख्वाब सारे
हम खड़े फुटपाथ पर!
खींचते हैं बस लकीरें
रोज अपने हाथ पर!
क्या करे ये ज़िन्दगी भी
आँख के हैं कर्म आँसू।
जानते सब धर्म आँसू।
वेदना के मर्म आँसू।

आज वर्षों बाद उनकी
याद है आई हमें!
फिर वही मंजर दिखाने
चाँदनी लाई हमें!
सोचकर ही यूँ उन्हें अब
बह चले हैं गर्म आँसू।
जानते सब धर्म आँसू।
वेदना के मर्म आँसू।

साथ थे जो लोग अपने
छोड़ वे भी जा रहे!
गीत में हम दर्द भरकर
सिर्फ बैठे गा रहे!
रोज लेते हैं मजे बस
छोड़कर सब शर्म आँसू।
जानते सब धर्म आँसू।
वेदना के मर्म आँसू।

रोज ही इनको बहाते
रोज ही हम पी रहे!
बस इन्हीं के साथ रहकर
जिन्दगी हम जी रहे!
पत्थरों के बीच रहकर
हो गये बेशर्म आँसू।
जानते सब धर्म आँसू।
वेदना के मर्म आँसू

साहित्य रत्न वर्ष-3 अंक-4 अगस्त2025 : ISSN:2583-8849

# अम्मा तुम तो चली गयी

अम्मा तुम तो चली गई पर लाल तुम्हारा झेल रहा।
जैसे तैसे घर की गाड़ी अपने दम पर ठेल रहा.

बैठ करे पंचायत दिन भर
सजती और सँवरती है!
जस की तस है बहू तुम्हारी
अपने मन का करती है!

कभी नहीं ये राधा नाची कभी न नौ मन तेल रहा।
अम्मा तुम तो चली गई पर लाल तुम्हारा झेल रहा।

राधे बाबा का लड़का तो
बेहद दुष्ट कसाई है!
संग उसी के घूमा करता
अपना छोटा भाई है!

सोचा था कुछ पढ़ लिख लेगा उसमें भी ये फेल रहा।
अम्मा तुम तो चली गई पर लाल तुम्हारा झेल रहा।

खेत कर लिया कब्जे में है
बोया उसमें आलू है!
लछमनवा से मगर मुकदमा
वैसे अब तक चालू है!

जुगत भिड़ाया तब जाकर वह एक महीने जेल रहा।
अम्मा तुम तो चली गई पर लाल तुम्हारा झेल रहा।

चलो कटेगा जैसे भी अब
आशीर्वाद तुम्हारा है!
और भरोसा है ईश्वर पर
उसका बहुत सहारा है!

खेल खिलाता वही सभी को और जगत ये खेल रहा।
अम्मा तुम तो चली गई पर लाल तुम्हारा झेल रहा।

साहित्य रत्न वर्ष-3 अंक-4 अगस्त2025 : ISSN:2583-8849

# चुप रहना मत रोना अम्मा

अपने घर का हाल देखकर,चुप रहना मत रोना अम्मा।
सन्नाटे में बिखर गया है,घर का कोना कोना अम्मा।

खेत और खलिहान बिक गये
इज्जत चाट रही माटी !
अलग अलग चूल्हों में मिलकर
भून रहे सब परिपाटी !
नज़र लगी जैसे इस घर को,या कुछ जादू टोना अम्मा।
सन्नाटे में बिखर गया है,घर का कोना कोना अम्मा।

बाँट लिए भैया भाभी ने
बाग बगीचे गलियारे !
अन ब्याही बहना है अब तक
बैठी लज्जा के मारे !
दुख की गठरी इन कंधों पर,जाने कब तक ढोना अम्मा।
सन्नाटे में बिखर गया है,घर कोना कोना अम्मा।

छोटे की लग गयी नौकरी
दूर शहर में रहता है !
पश्चिम वाली हवा चली जो
संग उसी के बहता है !
सिर्फ रुपैय्या खाता पीता,या फिर चाँदी सोना अम्मा।
सन्नाटे में बिखर गया है,घर कोना कोना अम्मा।

सिसक रहे हैं बर्तन भाड़े
मेज कुर्सियाँ अलमारी !
जो आँगन में तख्त पड़ा था
उस पर आज चली आरी !
तुम होती तो देख न पाती,यों रिश्तों का खोना अम्मा।
सन्नाटे में बिखर गया है,घर कोना कोना अम्मा।

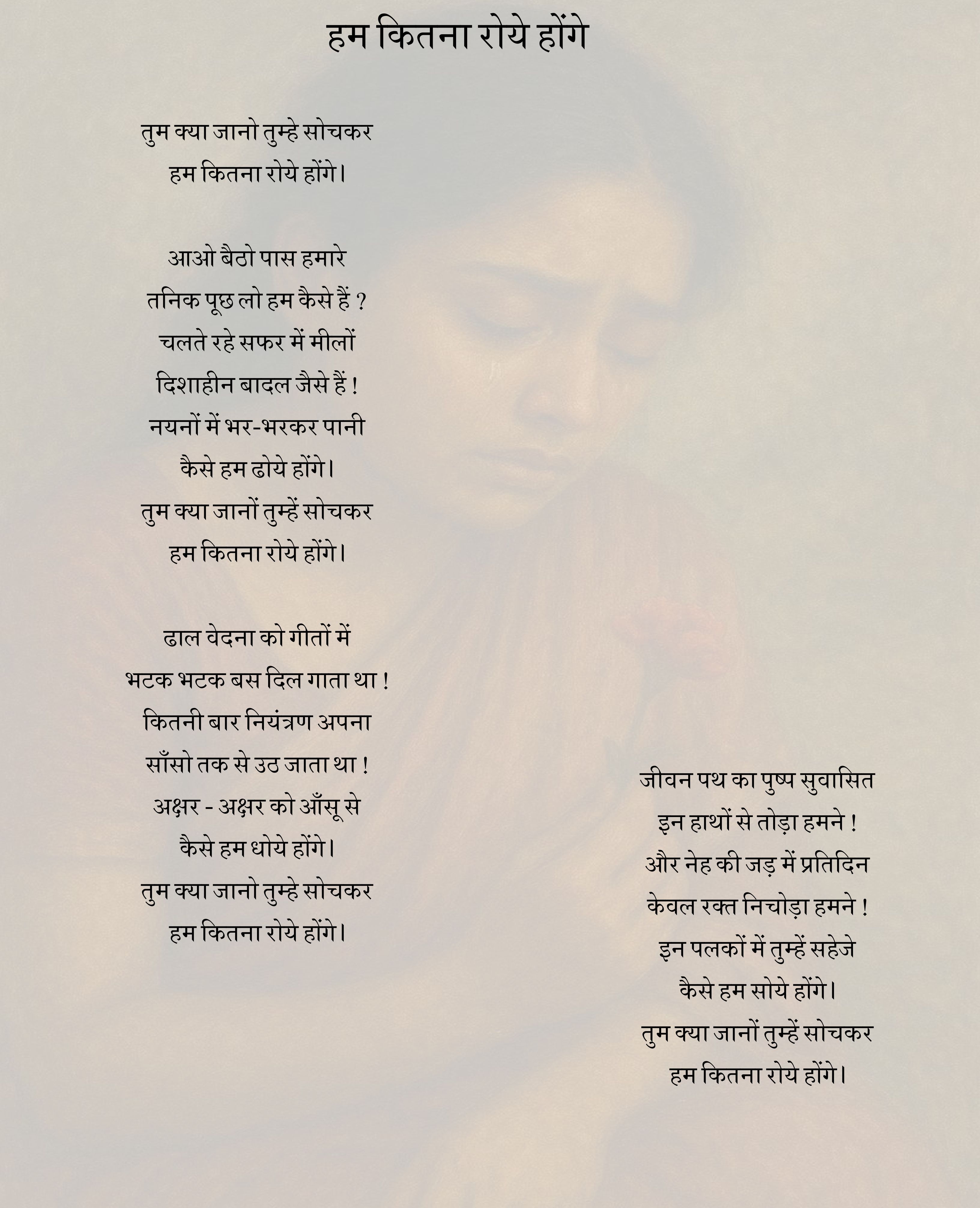

# हम कितना रोये होंगे

तुम क्या जानो तुम्हे सोचकर
हम कितना रोये होंगे।

आओ बैठो पास हमारे
तनिक पूछ लो हम कैसे हैं ?
चलते रहे सफर में मीलों
दिशाहीन बादल जैसे हैं !
नयनों में भर-भरकर पानी
कैसे हम ढोये होंगे।
तुम क्या जानों तुम्हें सोचकर
हम कितना रोये होंगे।

ढाल वेदना को गीतों में
भटक भटक बस दिल गाता था !
कितनी बार नियंत्रण अपना
साँसो तक से उठ जाता था !
अक्षर - अक्षर को आँसू से
कैसे हम धोये होंगे।
तुम क्या जानो तुम्हे सोचकर
हम कितना रोये होंगे।

जीवन पथ का पुष्प सुवासित
इन हाथों से तोड़ा हमने !
और नेह की जड़ में प्रतिदिन
केवल रक्त निचोड़ा हमने !
इन पलकों में तुम्हें सहेजे
कैसे हम सोये होंगे।
तुम क्या जानों तुम्हें सोचकर
हम कितना रोये होंगे।

# जाने कितनी बार ठगा

मन के भोलेपन को तुमने
जाने कितनी बार ठगा।

जो कुछ भी था मेरा अपना
कर डाला सब तुमको अर्पण !
देख तुम्हारे छल प्रपंच को,
जी भर रोया व्यथित समर्पण !
स्वप्न दिखाकर केवल झूठे
सच्चा पावन प्यार ठगा।
मन के भोलेपन को तुमने
जाने कितनी बार ठगा।

छाती से चिपकाकर सुधियाँ
पीड़ाओं ने लोरी गायी !
सहलाया दे- देकर थपकी
पर जाने क्यों नींद न आयी !
कर्तव्यों की अनदेखी कर
मनचाहा अधिकार ठगा।
मन के भोलेपन को तुमने
जाने कितनी बार ठगा।

निष्ठुरता ने भला प्रेम के
गीत सुकोमल कब हैं गाये !
पाषाणों ने कब लहरों की
धड़कन पर हैं कान लगाये !
ठगा सिन्धु सी गहराई को
नभ जैसा विस्तार ठगा।
मन के भोलेपन को तुमने
जाने कितनी बार ठगा।

# रामपाल अब नहीं लगाता है कुर्ते में नील

रामपाल अब नहीं लगाता है कुर्ते में नील।
उसकी खुशियाँ उसके सपने वक्त गया सब लील।

बिन पानी के मछली जैसे
तड़प रहा वह आज!
बिटिया अपनी ब्याहे कैसे
और बचाये लाज!
संघर्षों में सूख चली है आँखों की भी झील।
रामपाल अब नहीं लगाता है कुर्ते में नील।

शहर दिखाये ले जाकर जब
दो हजार हों पास!
संगी साथी कौन दे रहा
नहीं किसी से आस!
ठोक रही बीमारी माँ की छाती में बस कील।
रामपाल अब नहीं लगाता है कुर्ते में नील।

कर्म भाग्य का नहीं संतुलन
बनी गरीबी गाज!
देखे जो लाचारी इसकी
ताक लगाये बाज!
व्यंग्य कसे मुस्काये अक्सर खाँस-खाँस कर चील।
रामपाल अब नहीं लगाता है कुर्ते में नील।

फिर भी हिम्मत क्यों हारे वो
जीना है हर हाल।
पटरी पर ला देगा गाड़ी
आते-आते साल।
रोज-रोज आशाएँ दौड़ें जाने कितने मील।
रामपाल अब नहीं लगाता है कुर्ते में नील।

# एक अचम्भा

एक अचम्भा देखा हमने
आज गाँव के पास।
आसमान से परी उतरकर
छील रही थी घास।

सुंदरता को देख देवियाँ
रहीं स्वयं को कोस !
श्रम की बूँदें यों माथे पर
ज्यों फूलों पर ओस !
चूड़ी की खन खन सँग उसके
नृत्य करे मधुमास।
आसमान से परी उतर कर
छील रही थी घास।

चटक धूप में कोमल काया
दिखे कुंदनी रूप !
धूल सने हाथों से गढ़ती
पावन दृश्य अनूप !
करती जाती कठिन तपस्या
साथ लिए विश्वास।
आसमान से परी उतर कर
छील रही थी घास।

डलिया, खुरपा हरी धरा पर
छेड़ रहे थे तान !
अंग अंग से छलक रहा था
मेहनत का अभिमान !
साथ हवा के करती जाती
मधुर हास-परिहास।
आसमान से परी उतरकर
छील रही थी घास।

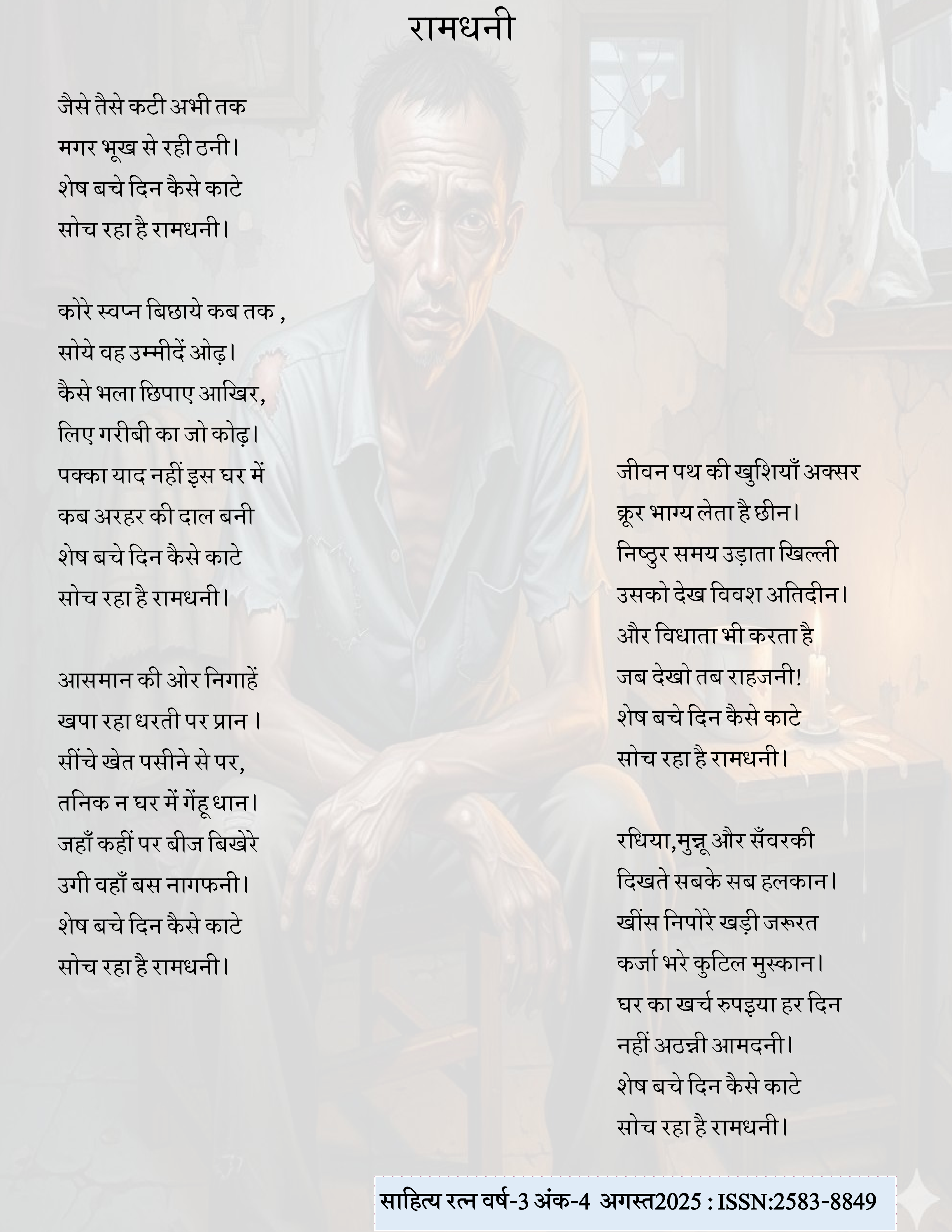

# रामधनी

जैसे तैसे कटी अभी तक
मगर भूख से रही ठनी।
शेष बचे दिन कैसे काटे
सोच रहा है रामधनी।

कोरे स्वप्न बिछाये कब तक ,
सोये वह उम्मीदें ओढ़।
कैसे भला छिपाए आखिर,
लिए गरीबी का जो कोढ़।
पक्का याद नहीं इस घर में
कब अरहर की दाल बनी
शेष बचे दिन कैसे काटे
सोच रहा है रामधनी।

आसमान की ओर निगाहें
खपा रहा धरती पर प्रान ।
सींचे खेत पसीने से पर,
तनिक न घर में गेंहू धान।
जहाँ कहीं पर बीज बिखेरे
उगी वहाँ बस नागफनी।
शेष बचे दिन कैसे काटे
सोच रहा है रामधनी।

जीवन पथ की खुशियाँ अक्सर
क्रूर भाग्य लेता है छीन।
निष्ठुर समय उड़ाता खिल्ली
उसको देख विवश अतिदीन।
और विधाता भी करता है
जब देखो तब राहजनी!
शेष बचे दिन कैसे काटे
सोच रहा है रामधनी।

रधिया,मुन्नू और सँवरकी
दिखते सबके सब हलकान।
खींस निपोरे खड़ी जरूरत
कर्जा भरे कुटिल मुस्कान।
घर का खर्च रुपइया हर दिन
नहीं अठन्नी आमदनी।
शेष बचे दिन कैसे काटे
सोच रहा है रामधनी।

# कमली चली गई

देख गाँव का भ्रष्ट आचरण
कमली चली गई।

हँसती गाती रही हमेशा
अक्सर ही इतराती थी!
संग सुमन के रही खेलती
मन ही मन हर्षाती थी!
उस उपवन के माली से ही
मसली कली गई।
देख गाँव का भ्रष्ट आचरण
कमली चली गई।

माथ पकड़कर झिनकन रोता
रोती बहुत कटोरी है!
हाय विधाता क्या कर डाला
किसकी सीनाजोरी है!
बड़की छुटकी बचीं भाग्य से
मँझली छली गई।
देख गाँव का भ्रष्ट आचरण
कमली चली गई।



मुखिया जी सब जान रहे थे
किसने अस्मत लूटी थी!
और बिचारी क्योंकर आखिर
अन्दर से वह टूटी थी!
देशी दारू थी पहले ही
मछली तली गई।
देख गाँव का भ्रष्ट आचरण
कमली चली गई।

थोड़ा-सा वह हिम्मत करती
और बजाती जो डंका!
रावण तो मरता ही मरता
खूब जलाती वह लंका!
कैसे कह दूँ ठीक किया औ'
पगली भली गई।
देख गाँव का भ्रष्ट आचरण
कमली चली गई।

# लिखकर गीत रात भर रोये

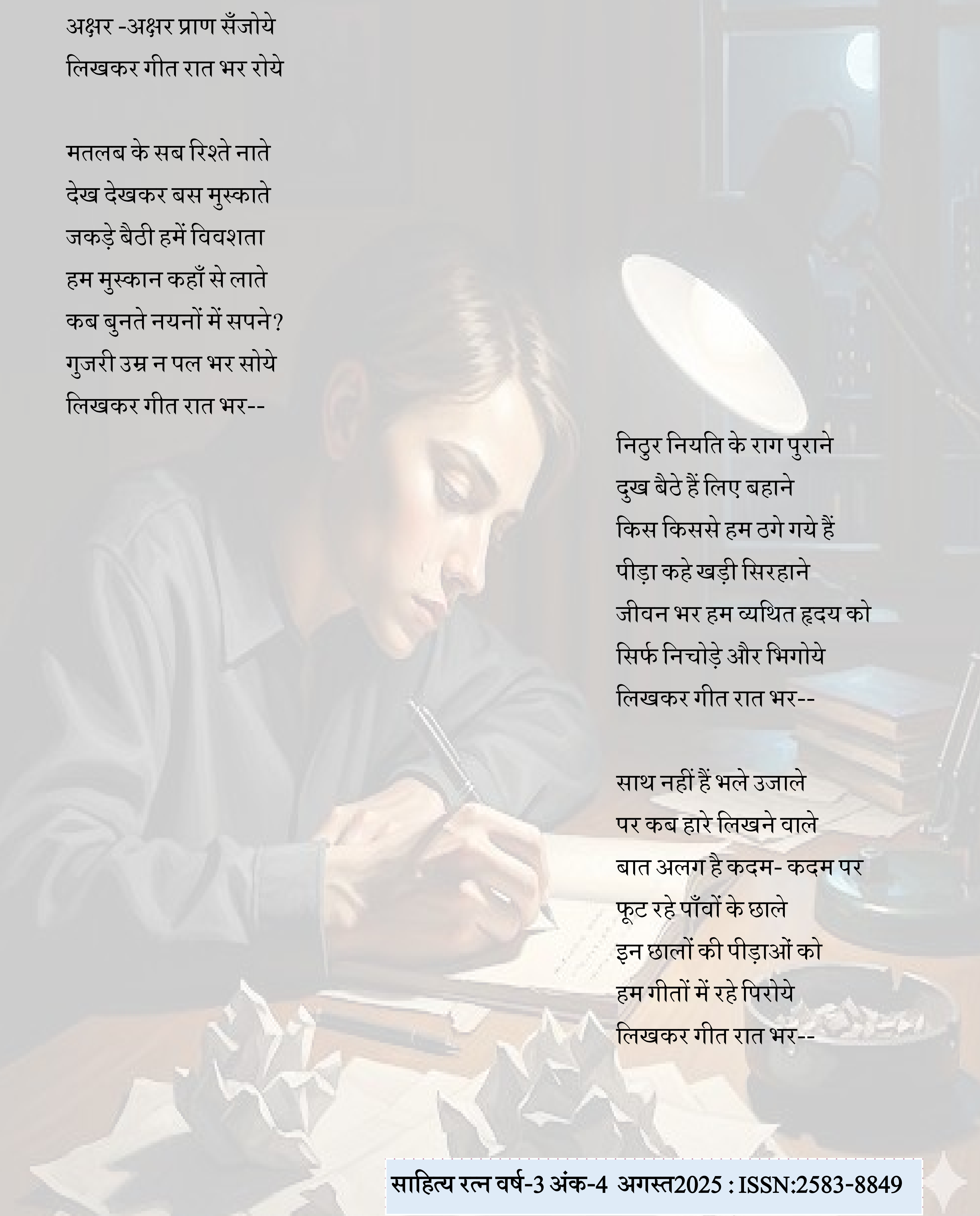

अक्षर -अक्षर प्राण सँजोये
लिखकर गीत रात भर रोये

मतलब के सब रिश्ते नाते
देख देखकर बस मुस्काते
जकड़े बैठी हमें विवशता
हम मुस्कान कहाँ से लाते
कब बुनते नयनों में सपने?
गुजरी उम्र न पल भर सोये
लिखकर गीत रात भर--

निठुर नियति के राग पुराने
दुख बैठे हैं लिए बहाने
किस किससे हम ठगे गये हैं
पीड़ा कहे खड़ी सिरहाने
जीवन भर हम व्यथित हृदय को
सिर्फ निचोड़े और भिगोये
लिखकर गीत रात भर--

साथ नहीं हैं भले उजाले
पर कब हारे लिखने वाले
बात अलग है कदम- कदम पर
फूट रहे पाँवों के छाले
इन छालों की पीड़ाओं को
हम गीतों में रहे पिरोये
लिखकर गीत रात भर--

# चूमे प्रेम निशानी मन

तड़पे,सिसके,छुए निहारे
चूमे प्रेम निशानी मन।
लौट न पाता पास तुम्हारे
किन्तु हठी,अभिमानी मन।

किया हवा ने छल बादल से,
चली छुड़ाकर हाथ अचानक।
ठहर गया बढ़ सका न आगे,
रहा अधूरा प्रेम कथानक।
बुने उसी को साँझ सकारे,
पल पल गढ़े कहानी मन।
लौट न पाता पास तुम्हारे
किन्तु हठी, अभिमानी मन।

पलकों की चौखट पर बैठे
स्वप्न अपाहिज डाले आसन ।
लौटेगी बैसाखी लेकर ,
नींद नहीं देती आश्वासन।
उम्मीदों पर रात गुजारे
पड़े पड़े सैलानी मन।
लौट न पाता पास तुम्हारे
किन्तु हठी,अभिमानी मन।

इठलाती चंचल लहरों पर,
डाल रहा सन्नाटा डोरे।
नाम रेत पर लिखें उंगलियां
विरह वेदना सीप बटोरे।
रोज उलचता बैठ किनारे,
नम आँखों का पानी मन।
लौट न पाता पास तुम्हारे
किन्तु हठी, अभिमानी मन

बिखर गया था जहाँ प्रणय का,
रिश्ता नाज़ुक धागों वाला।
गूँथे जहाँ मौन आकुलता,
अनुबन्धों की टूटी माला।
खड़ा वहीं से तुम्हें पुकारे,
करने को अगवानी मन।
लौट न पाता पास तुम्हारे
किन्तु हठी,अभिमानी मन।

# रिक्शे वाले

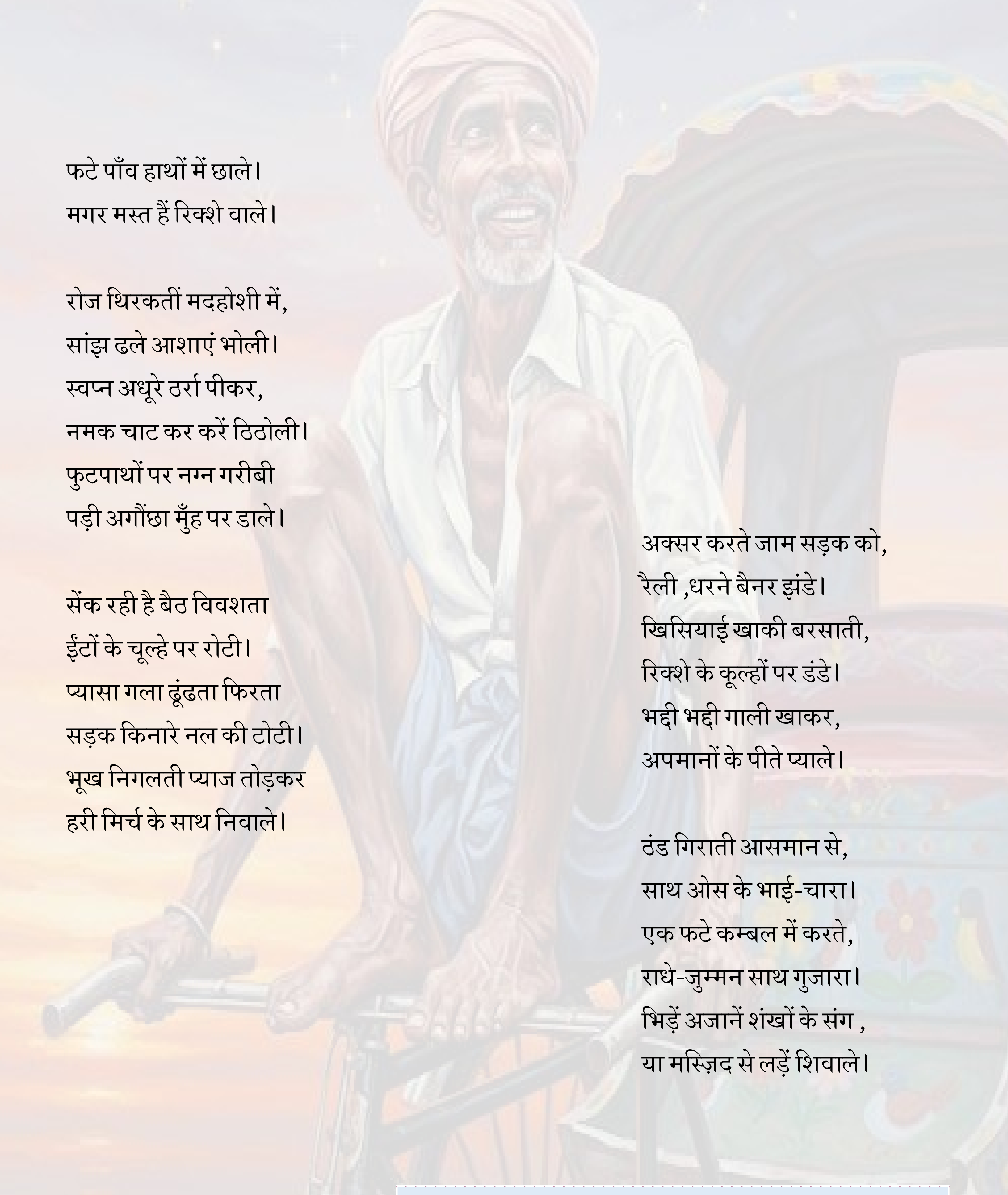

फटे पाँव हाथों में छाले।
मगर मस्त हैं रिक्शे वाले।

रोज थिरकतीं मदहोशी में,
सांझ ढले आशाएं भोली।
स्वप्न अधूरे ठर्रा पीकर,
नमक चाट कर करें ठिठोली।
फुटपाथों पर नग्न गरीबी
पड़ी अगौंछा मुँह पर डाले।

सेंक रही है बैठ विवशता
ईंटों के चूल्हे पर रोटी।
प्यासा गला ढूंढता फिरता
सड़क किनारे नल की टोटी।
भूख निगलती प्याज तोड़कर
हरी मिर्च के साथ निवाले।

अक्सर करते जाम सड़क को,
रैली ,धरने बैनर झंडे।
खिसियाई खाकी बरसाती,
रिक्शे के कूल्हों पर डंडे।
भद्दी भद्दी गाली खाकर,
अपमानों के पीते प्याले।

ठंड गिराती आसमान से,
साथ ओस के भाई-चारा।
एक फटे कम्बल में करते,
राधे-जुम्मन साथ गुजारा।
भिड़ें अजानें शंखों के संग ,
या मस्ज़िद से लड़ें शिवाले।

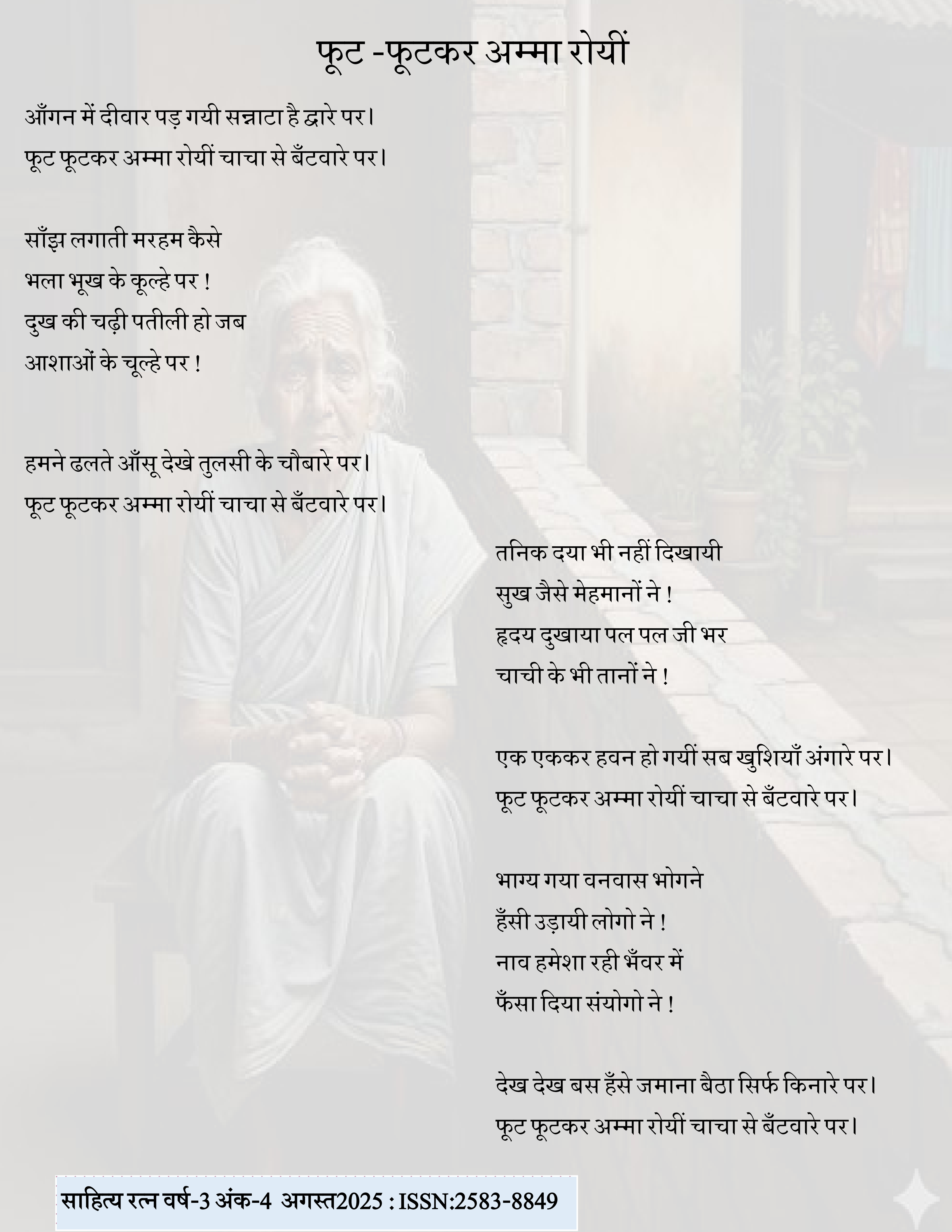

# फूट -फूटकर अम्मा रोयीं

आँगन में दीवार पड़ गयी सन्नाटा है द्वारे पर।
फूट फूटकर अम्मा रोयीं चाचा से बँटवारे पर।

साँझ लगाती मरहम कैसे
भला भूख के कूल्हे पर !
दुख की चढ़ी पतीली हो जब
आशाओं के चूल्हे पर !

हमने ढलते आँसू देखे तुलसी के चौबारे पर।
फूट फूटकर अम्मा रोयीं चाचा से बँटवारे पर।

तनिक दया भी नहीं दिखायी
सुख जैसे मेहमानों ने !
हृदय दुखाया पल पल जी भर
चाची के भी तानों ने !

एक एककर हवन हो गयीं सब खुशियाँ अंगारे पर।
फूट फूटकर अम्मा रोयीं चाचा से बँटवारे पर।

भाग्य गया वनवास भोगने
हँसी उड़ायी लोगो ने !
नाव हमेशा रही भँवर में
फँसा दिया संयोगो ने !

देख देख बस हँसे जमाना बैठा सिर्फ किनारे पर।
फूट फूटकर अम्मा रोयीं चाचा से बँटवारे पर।

# कल्लू काका

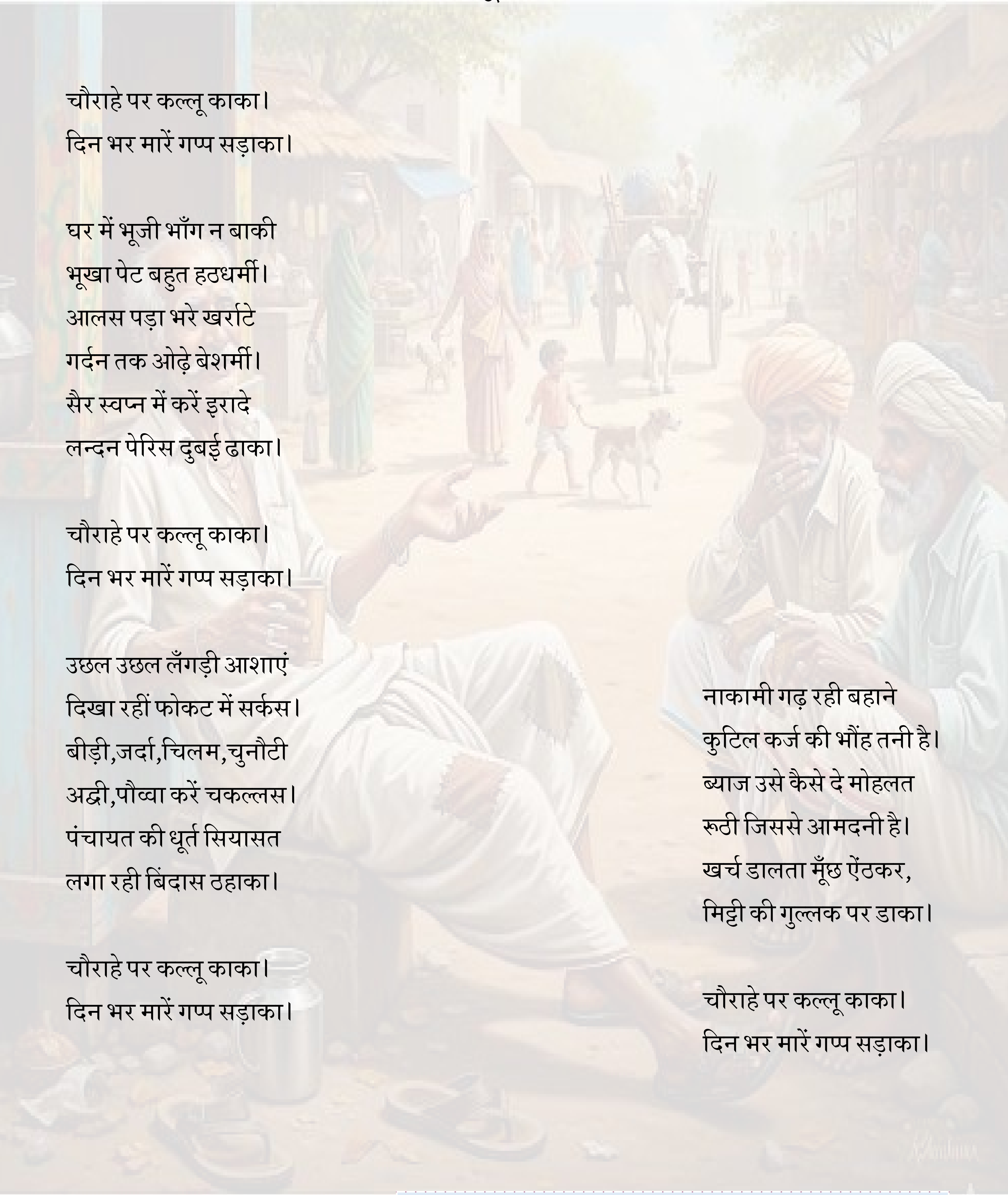

चौराहे पर कल्लू काका।
दिन भर मारें गप्प सड़ाका।

घर में भूजी भाँग न बाकी
भूखा पेट बहुत हठधर्मी।
आलस पड़ा भरे खर्राटे
गर्दन तक ओढ़े बेशर्मी।
सैर स्वप्न में करें इरादे
लन्दन पेरिस दुबई ढाका।

चौराहे पर कल्लू काका।
दिन भर मारें गप्प सड़ाका।

उछल उछल लँगड़ी आशाएं
दिखा रहीं फोकट में सर्कस।
बीड़ी,जर्दा,चिलम,चुनौटी
अद्धी,पौव्वा करें चकल्लस।
पंचायत की धूर्त सियासत
लगा रही बिंदास ठहाका।

चौराहे पर कल्लू काका।
दिन भर मारें गप्प सड़ाका।

नाकामी गढ़ रही बहाने
कुटिल कर्ज की भौंह तनी है।
ब्याज उसे कैसे दे मोहलत
रूठी जिससे आमदनी है।
खर्च डालता मूँछ ऐंठकर,
मिट्टी की गुल्लक पर डाका।

चौराहे पर कल्लू काका।
दिन भर मारें गप्प सड़ाका।

# सँवरकी

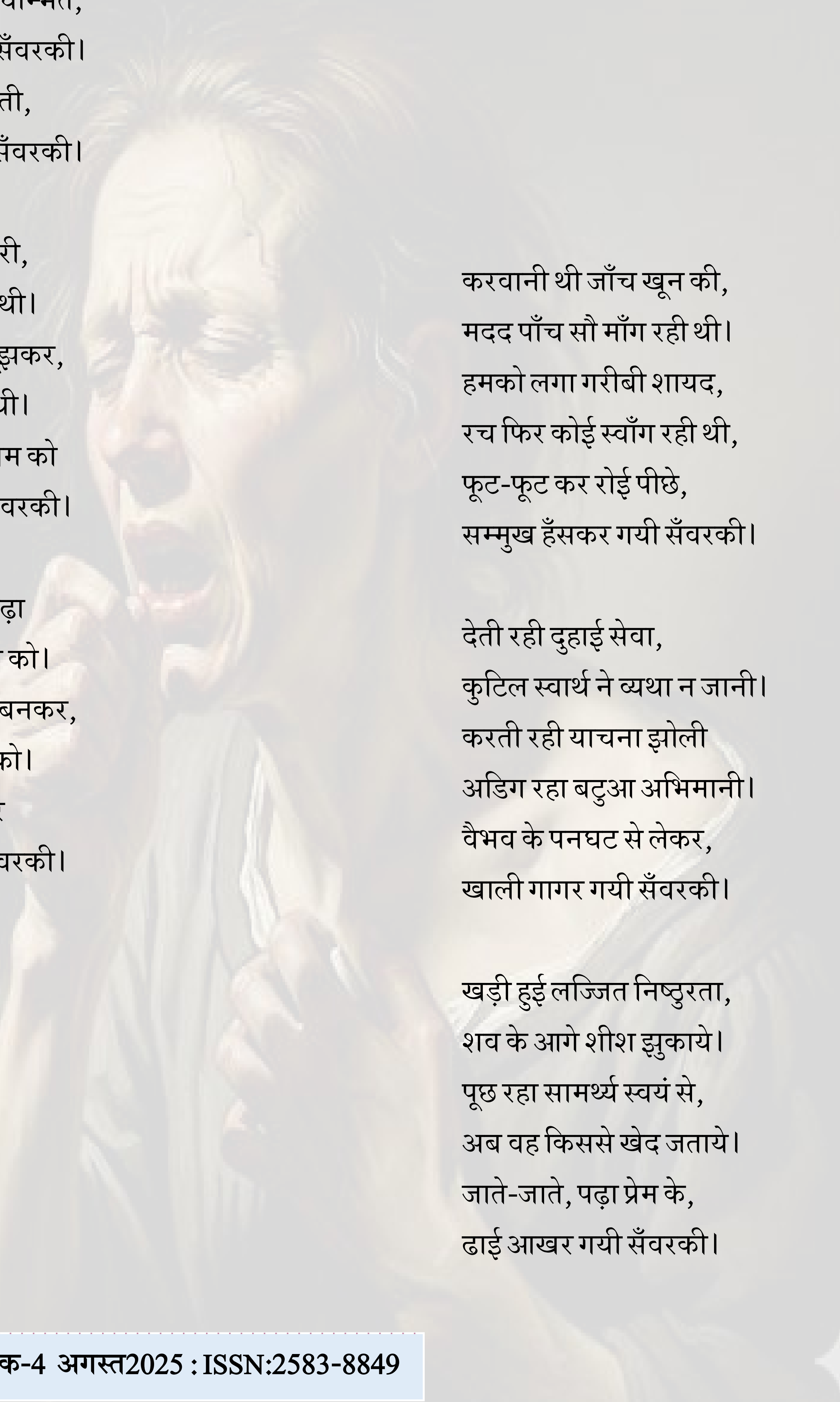

आज अचानक हमें अचम्भित,
सुबह-सुबह कर गयी सँवरकी।
कफ़ ने जकड़ी ऐसे छाती,
खाँस-खाँस मर गयी सँवरकी।

जूठन धो-धोकर,खुद्दारी,
बच्चे दो-दो पाल रही थी।
विवश जरूरत जान बूझकर,
बीमारी को टाल रही थी।
कल ही की तो बात शाम को
ठीक-ठाक घर गयी सँवरकी।

लाचारी पी-पीकर काढ़ा
ढाँढस रही बँधाती मन को।
आशंकित थी, दीमक बनकर,
टीबी चाट रही है तन को।
संघर्षों से हाथ छुड़ाकर
भव सागर तर गयी सँवरकी।

करवानी थी जाँच खून की,
मदद पाँच सौ माँग रही थी।
हमको लगा गरीबी शायद,
रच फिर कोई स्वाँग रही थी,
फूट-फूट कर रोई पीछे,
सम्मुख हँसकर गयी सँवरकी।

देती रही दुहाई सेवा,
कुटिल स्वार्थ ने व्यथा न जानी।
करती रही याचना झोली
अडिग रहा बटुआ अभिमानी।
वैभव के पनघट से लेकर,
खाली गागर गयी सँवरकी।

खड़ी हुई लज्जित निष्ठुरता,
शव के आगे शीश झुकाये।
पूछ रहा सामर्थ्य स्वयं से,
अब वह किससे खेद जताये।
जाते-जाते, पढ़ा प्रेम के,
ढाई आखर गयी सँवरकी।

# मेरे गाँव की चिनमुनकी

मीठे गीत प्रणय के गाकर
और रात सपनों में आकर
मुझको रोज छला करती है
मेरे गाँव की चिनमुनकी ।

अक्सर कहकर मर जाऊँगी
मुझको बहुत डराती है !
और ठान ले जो जिद अपनी
मुझसे पाँव धराती है !
कभी - कभी रस खूब घोलकर
और कभी वो झूठ बोलकर
अक्सर बहुत कला करती है
मेरे गाँव की चिनमुनकी।

कहीं देख ले साथ गैर के
फिर आफत बन जाती है !
हो करके वह आग बबूला
गुस्से से तन जाती है !
छुप जाती है कभी रूठकर
रोने लगती फूट - फूटकर
शम्मा बन पिघला करती है
मेरे गाँव की चिनमुनकी।

आ पीछे से कभी - कभी वह
आँख बंद कर लेती है !
नही देखता कोई फिर तो
बाँहों में भर लेती है !
सारे नखरे भूल भालकर
मुझ पर यौवन रूप डालकर
सचमुच बहुत भला करती है
मेरे गाँव की चिनमुनकी।

ये दिल है बस सिर्फ उसी का
चंद दिनों की दूरी है !
छोड़ उसे मैं दूर आ गया
उफ ! कितनी मजबूरी है
यादों में पायल छनकाकर
और कभी कंगन खनकाकर
धड़कन संग चला करती है
मेरे गाँव की चिनमुनकी।